रात्रिक्लास 13.3.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?''

किसके पास बैठे हो? सभी का एक ही रेसपॉन्स निकलेगा। यह तो बच्चे जानते हैं सुप्रीम बाबा भी है, शिक्षक भी है। बेहद का बाबा है घर भी ले जावेंगे। अभी यह तो बच्चों को निश्चय है ना। ऐसा भी है जिसको निश्चय नहीं है। और फिर यह भी निश्चय है बाबा कल्प–2 पुरुषोत्तम संगमयुग पर आते हैं। सतयुग जिसको नई दुनियाँ कहा जाता है देवी–देवताओं का ही राज्य होता है। पुरानी दुनियाँ को बदली करना फिर मनुष्यों को देवता बनाना यह किसका काम है? वह कब आते हैं यह भी याद है। जानते हो हम ब्राह्मण कुल के हैं। बाप ने आकर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा अपना बनाया है। बेहद के बाप के बने हैं नर से नारायण बनने। यह वही कथ्रा है जो हर मास सत्य ना. दिन सुनते थे; परन्तु उससे बने नहीं। यह तो बरोबर बाप वह सुनाते हैं। बाप सृष्टि के आदि,मध्य, अंत का राज़ बताते हैं। यह तो सभी का बाप है। सभी उनको बाबा–बाबा कहते हैं। भक्तिमार्ग में कहते भी हैं पतित–पावन है। तो बच्चों को विचार सागर–मंथन करना चाहिए। फिर समझाना चाहिए। जाते हैं बाबा अमरकथा सुनाते हैं अमरलोक लिए। नया कोई होगा तो बुद्धि में बैठेगा नहीं। ऐसे फिर कोई को यहां अलौ(अलाउ) नहीं किया जाता। लिख कर देते हैं तब बुलाते हैं। फिर माया की बॉक्सिंग भी बहुत चलती है। बहुत तंग करते हैं। फिर कहते हैं बाबा आप की माया। अरे, यह तो खेल है। हमारा थोड़े ही कुछ है। उनका भी पार्ट है, हमारा भी पार्ट है। वह माया गिराती है, हम एक ही धक से (च)ढ़ाते हैं। यह खेल है। एमऑब्जेक्ट बुद्धि में है हम पूरा बनेंगे। पूरा योग। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के भी अंत में हमने इसमें प्रवेश किया है। इनमें बेहद की बाप की प्रवेशता है। इसकी ही जयन्ति ब(म)नाते हैं। य(ह) ज्ञान ब्रह्मा नहीं देते। इनका तो नाम भी नहीं है। यह है विचार–सागर–मंथन करने की बातें। किसको समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। कोई तो कुछ भी नहीं सम(झ)ते। न समझते तो बेसमझ ठहरे। बाप पूछते हैं ना आगे कब मिले हो? तुम कहते हो ज़रूर बाबा से मिले थे तब तो देवता बनते हैं। इसके लिए यह कल्याणकारी संगम युग है। कुम्भ का मेला वह तो स्थूल मनाते हैं। आत्माएं परमात्मा अलग रहे बहुकाल.....बाकी वह कुम्भ आद(दि) का मेला है भक्तिमार्ग का। उससे क्या मिलता है? घर में भी गंगा का पानी तो है ना। फिर गंगा में क्या जाते हो? बहुत बड़ी–2 नदियाँ होती हैं जिससे नहर निकलती है। स्नान करते हैं पावन बनेंगे। तुम समझाते हो पतित–पावन तो बाप है। भक्तिमार्ग के शास्त्रों में कैसी–2 बातें लिख दी हैं। कितनी कथाएँ बैठ सुनाते हैं। आगे तो तुम भी सत–सत करते थे। अभी बाप कहते हैं यह सभी भक्तिमार्ग की सामग्री है। यहां तो सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है। बेहद का बाबा है, हम उनके बच्चे हैं। बेहद का बाप सतयुग की स्थापना करते हैं। तो उनके मालिक बनते हैं। जो बने थे वह फिर वैसे ही बनेंगे। बाप ब्राह्मण बच्चों को ज्ञान सुनाते हैं। ज्ञान में है ही एक। मेरा तो एक दूसरा न कोई। ऐसे निश्चय बुद्धि ही फिर यहां आ सकते हैं। माया के तूफान आने से माया ठण्डा कर देती है। बाप तो डायरैक्शन देते हैं मामेकं याद करो। बाकी सभी है मेरी रचना। रचना को रचना वर्सा नहीं दे सकते। रचयिता से ही वर्षा मिलता है। लौकिक से हद का मिलता है। मैं बेहद का बाप हूँ। हद के बाप से हद का वर्सा, बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। कितनी (समझ) की बात है। हद के बाप से जन्म–जन्मांतर का वर्सा पाते आये हो। पतित होने कारण दिन–प्रतिदिन आयु कमती होती गई है। भारत में देवताओं की कितनी बड़ी आयु थी। मनुष्यों की कितनी छोटी आयु है। वह योगी थे, मनुष्य भोगी बने हैं। अभी भोगी से योगी बनाने वाला कोई चाहिए ना। फिर योगेश्वर आते हैं। कहते हैं मामेकंम याद करो। तुम कहते हो पतित–पावन.....भक्तिमार्ग में गाते हैं पतित–पावन.....अभी बाप समझाते हैं कैसे मैं पावन बनाता हूँ। 84 पुनर्जन्म कोई ने तो लिया होगा ना। जो पहले आये होंगे वही 84 पुनर्जन्म ले तमोप्रधान बने फिर वह सतोप्रधान कैसे बने; क्योंकि हिस्ट्री मस्ट रिपीट होनी है।

यह बना बनाया ड्रामा है। इनमें न कुछ एड हो सकता है , न कुछ बदली हो सकता है। यह 84 का चक्र है। कितना सहज है। बाप कहते हैं अहिल्याएँ, कुब्जाएँ, गणिकाएँ उनका मैं बेड़ा पार करता हूँ। यह तो सारी दुनियाँ ही वैश्यालय है। कोसघर है। एक/दो पर काम कटारी चलाते हैं। आयु कमती होती जाती है। अकाले मृत्यु हो जाती है। पेट से निकला मृत्यु हुआ। पेट में भी मृत्यु हो जाता। अभी तो बाबा अमरलोक ले चलते हैं। वहां दुःख का नाम–निशान नहीं। तुम विश्व में शान्ति बनाते हो। प्राईज़ मिलती है यह। सभी को एक समान तो प्राईज़ मिल न सके। कोई सर्विस का सबूत देते हैं ,कोई कम देते हैं। माया किसको भी छोड़ती नहीं है। ठूँसा लगा देती है। काम का ठूँसा लगने से गिर पड़ते; इसलिए ही बाबा कहते हैं काम पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। सम्पूर्ण निर्विकारी। यहां सभी हैं विकारी। सभी रावण राज्य के हैं। वह (प)हले अपने धर्म में अच्छे थे फिर उनको भी उतरना है। बाप कहते हैं तुम्हारा स्वर्ग का सुख कितना था? कहा ही जाता है हेवन। पैराडाईज़। समझाते बहुत हैं ; परन्तु कोटों में कोऊ ही समझते हैं। रावण राज्य वाले थोड़े ही समझेंगे। कितना भी माथा मारो, कब नहीं समझेंगे। वह फिर रावण राज्य में ही आते हैं। द्वापर के बाद तो वृद्धि बहुत होती है। कोई तो बिल्कुल ही नहीं समझेंगे। कोई थोड़ा समझेंगे। एक/दो को शिवबाबा को याद दिलाना इससे भी बहुत कल्याण होगा। याद से ही पावन बनेंगे। मूल बात यह है। बाप कहते हैं हे बच्चों ,मामेकं याद करो तो पावन बन जावेंगे। पतित–पावन मैं हूँ। तुमने अनेक बार राजाई की है। तुम स्वर्ग के मालिक बने हो। यह सभी बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं। और है बहुत सहज। जैसे ..... (कहानी) है। बुद्धि(में) यह सारा राज़ बैठा हुआ है। ऐसे सीढ़ी उतरे। सिरताज थे। अभी तो कोई भी राज्य है नहीं। पंचायती राज्य हो गया है। फिर बाबा आये हैं। यह बातें समझेंगे वही जिन्होंने कल्प समझा होगा। मन्ज़िल है बड़ी। मनुष्य से देवता बनना बड़ा इम्तहान है। तुम बाप को याद करते हो माया उसमें विघ्न डालती है। जैसे रेडियो में आवाज़ होता है ना। यह माया भी विघ्न ज़रूर डालेगी। यह भी समझ(ो) यह जैसे कि पाई–पैसे की कहानी है। बाप तो सत्य ही सुनाते हैं। बाहर वाले हंसी उड़ावेंगे। कहेंगे यह बातें तुम्हारे दादा ने सुनाई हैं। सतयुग तो यहां ही है। अभी यह तो तुम ही जानते हो हरेक जैसे नैया है। नैया झूलती है ; परन्तु हाथ माँझी का पकड़ा होगा तो डूबेगा कब नहीं। हाथ छोड़ा तो डूब पड़ेगा। तुम जानते हो हम पार जा रहे हैं। मृत्यु–लोक से अमर–लोक। बाप देखते हैं आत्माओं को, तो आत्मा को बड़ी खुशी होती है। बस इनको देखते रहें ; क्योंकि चकमक है ना। यह बेहद का सन्यास तुमको बेहद का बाप ही सिखलाते हैं। वह तो नारी को विधवा बना देते हैं। बाप कहते हैं वह भक्ति है, ज्ञान अलग चीज़ है। वह थोड़े ही समझते हैं यह शास्त्र आर(दि) भक्ति है। वह इसको ज्ञान समझते हैं। बाप कहते हैं भक्ति में तुम कितने बेसमझ बन पड़े हो जो मुझे आना पड़ता है समझाने लिए। खुशी होनी चाहिए ना हम कितने समझदार बनते हैं। यह स्कूल है, पाठशाला है। तुमको यह बनाता हूँ। कब सुना जो तुमको ऐसा विश्व का मालिक बनावें। देहधारी बना न सके। ज्ञान का सागर ,शन्ति का सागर है ही एक। मनुष्य का मर्तबा ही नहीं। मर्तबा सभी के अलग–2 हैं ना। सभी एक ही एक कैसे हो सकते हैं। चर्याई है। मनुष्य जानते हैं यह संगमयुग है। बाप समझाते हैं। तुम देवता बनने वाले हो। यह है भाग्शाली रथ। अपना रथ किराया पर देते हैं। भागीरथ को बहुत ही मिलता होगा। यह बड़ी नदी है। सच्ची–2 मम्मा तो यह है ना। उनको फिर एडॉप्ट किया गया। नदियों में बड़ी नदी ब्रह्मा पुत्रा होती है। मेल दोनों का सागर में होता है। तुम ज्ञान सागर पास चले जाते हो। .... देवता बन जाते हो। वहां कहते ही नहीं कि पति(त)–पावन गंगा। तो मनुष्य समझते हैं बड़ा मुश्किल है। समझाते–2 माथा मारते तुम भी अभी समझ के बीच आये हो। समझाने लायक बने हो तब ही सर्विस पर निकले हो। रोमांच होनी चाहिए हमको बेहद का बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। कहते हैं अलफ और बे को याद करो। सेकण्ड में जीवनमुक्ति फिर कहते सागर ..... बनाओ तो भी अंत न होगी। ओमशान्ति। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।